✲✲✲ अध्याय क्र.2 ✲✲✲

xxx खंडकाव्य स्वरुप – सैध्दांतिक विवेचन xxx

हिंदी साहित्य के रचना संसार में विहार करने पर स्पष्ट होता है कि हिंदी साहित्यकारोंने विविध विधाओं के अंतर्गत विविध दिशाओं में अपनी सूक्ष्म दृष्टि डाली हैं । खास करते हुए पद्य के अंतर्गत बहुत से खंडकाव्य लिखे हैं – जो काफी प्रसिध्द और महत्वपूर्ण भी है । जैसे कि 'सुदामचरित' – नरोत्तम कवि, 'जयद्रथ वध', 'बकसंहार', 'सैरंध्री', 'पंचवटी', 'तिलोत्तमा' – मैथिलीशरण गुप्त, 'भोजराज' – रसात, 'पथिक', 'मिलन' – रामनरेश त्रिपाठी, 'रतिविलाप' – उदयवीर विराज, 'चित्तोड की चिता' – डॉ. रामकुमार वर्मा, 'तुलसीदास' – निराला, 'विस्मृत उर्मिला' – नवीन 'ग्रंथि' – पंत और नागार्जुन कृत 'भस्मांकुर' आदि खंडकाव्यों ने हिंदी साहित्य में अपना स्थान बनाया है । इसीलिए हमें खंडकाव्य का विस्तृत अध्ययन करने के लिए खंडकाव्य का स्वरुप और सैध्दांतिक विवेचन करना जरुरी है ।

साहित्य में खंडकाव्य का महत्वपूर्ण स्थान है । उनके अस्तित्व को स्पष्ट करने के लिए हमें काव्य का वर्गीकरण देखना पडेगा, तभी हम खंडकाव्य का स्वरुप स्पष्ट कर सकते हैं ।
काव्य कवि की अभिव्यक्ति है । जब कवि अपनी अनुभूतियों का प्रकाशन पूर्ण वैयक्तिक भूमिका पर करता है, तब गीत और प्रगीत बनते हैं । जब कवि प्रकाशन के लिए अन्य तत्वों को स्वीकार करता है, अपनी अनुभूतियों के साथ अन्य आख्यानों का स्वीकार करता है, तब प्रबंध काव्य का निर्माण होता है । काव्य कवि के आत्मा की अभिव्यक्ति है, जिसमें कल्पना और सत्य दोनों अंतर्मुक्त रहते हैं । साहित्य में खंडकाव्य का अस्तित्व तो है, उनके अस्तित्व को स्पष्ट करने के लिए हमें काव्य का वर्गीकरण देखना जरुरी है । तभी हम खंडकाव्य के स्वरुप का विवेचन कर सकते हैं ।

काव्य का निर्माण तो सभी भाषाओं में हुआ हैं । सभी भाषाओं में काव्य के विविध रुप है, क्योंकि अभिव्यंजना की भिन्नता के कारण उसके भिन्न–भिन्न रुप निर्माण हो गए है । इसी आधार–

पर हम संस्कृत, अंग्रेजी और हिंदी काव्य रुपों का वर्गीकरण करेंगे ।

अ) <u>संस्कृत में काव्य का वर्गीकरण</u> :-

संस्कृत के प्रमुख आचार्यो में भामह, दंडी, वामन, रुद्रट, हेमचंद, पं.जगन्नाथ और मम्मट जैसे आचार्योने काव्य का वर्गीकरण किया है । भामह ने काव्य का वर्गीकरण दो आधारों पर किया है – 1) प्रतिपाद्य के आधारपर और 2) बंध के आधार पर । बंध के अंतर्गत अनिबध्द (मुक्तक कथा आख्यायिका और अभिनयवस्तु (नाटक), सर्गबंध तत्व आते हैं । और प्रतिपाद्य वस्तु के अंतर्गत काव्य के तत्व है – कल्पित और देवादिवृत्त निरुपक । कल्पित शास्त्राधारित और देवादिवृत्त निरुपक कलाश्रित होता है । उनके इस विवेचन से स्पष्ट होता है कि उन्होंने गद्य और पद्य का विभाजन नहीं किया है । भामह ने जो काव्य का वर्गीकरण किया है वह कम है क्योंकि काव्य के तत्वों की संख्या तो उनकी संख्या से अधिक है ।

दंडी ने काव्य का वर्गीकरण इस प्रकार किया है –

"पद्य गद्य च मिश्रं च तत् त्रिधंव व्यवस्थितंम् ।
पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा" । 1

"काव्यादर्श" – दंडी ।

गद्य, पद्य और मिश्र काव्य शरीर के तीन भेद माने है । पद्य को उन्होंने जाति और वृत्त छंद में पुनः विभार्जित किया है और सर्गबंध के मुक्तक, क्लुक, कोश, संधात आदि रुप बताये है । इससे स्पष्ट होता है कि, दंडी ने काव्य नहीं काव्य शरीर का वर्गीकरण किया है । इस अर्थ से विभूषित पद समूह को ही उन्होंने काव्य शरीर की संज्ञा दी है । 2

"काव्यसूत्रालंकार" में वामन ने काव्य का वर्गीकरण छंद और बंध के आधार पर किया है । रुद्रट ने काव्य का वर्गीकरण इस प्रकार किया है –

सन्ति द्विधा प्रबन्धाः काव्यकथाव्याख्यायिकादयः काव्ये ।

उत्पाद्यानुत्पाद्या महततघुत्वेन मूयो ऽ पि ।। 3

रुद्रट के मतानुसार काव्य का वर्गीकरण काव्य, कथा और आख्यियिका वर्गों में होता है ।

हेमचंद ने काव्यानुशासन में काव्य वर्गीकरण का गंभीरता से विचार किया है । उन्होंने काव्य का वर्गीकरण इंद्रिया, बंध और संख्या के आधार पर किया है और उन्होंने दृश्य काव्य को प्रबंध से पृथक स्थान दिया है । मम्मट ने काव्य का वर्गीकरण गुण के आधार पर किया है । "रसगंगाधर" में पं.जगन्नाथ ने गुण के आधार पर काव्य की चार कोटियाँ बतायी है । 4

तच्योतमोत्तममध्यमाधमनेदाचतुर्था ।

"रसगंगाधर" – जगन्नाथ ।

पं.जगन्नाथ और मम्मट ने गुण के आधार पर ही काव्य का वर्गीकरण किया है । इस प्रकार संस्कृत के आचार्यों ने काव्य का वर्गीकरण किया है ।

इन सब के अलावा विश्वनाथ कविराज एक ऐसे संस्कृत के आचार्य है – जिन्होंने काव्य–रुपों में बदल किया है । उनके पूर्व से आचार्योंने प्रबंध काव्य माना है किंतु खंडकाव्य को उसके अंतर्गत नहीं माना है । मगर विश्वनाथ प्रबंध काव्य के अंतर्गत खंडकाव्य को रखा है । इसीलिए यह काव्य का रुप संस्कृत काव्य में अलग है । लेकिन इस काव्यरुप ने भी संस्कृत काव्य में अपना स्थान बनाया है ।

आ) अंग्रेजी में काव्य का वर्गीकरण :–

अंग्रेजी में भी काव्य के विविध रुप है । इन काव्य रुपों का वर्गीकरण हडसन, अरस्तु जैसे साहित्यकारोंने किया है । अंग्रेजी साहित्य में काव्यसंवेदना के आधार पर काव्य वर्गीकरण किया

है । [5] महान चिंतक अरस्तुने भी काव्य का वर्गीकरण किया है, उन्होने कवि–कवित्व, विषय, मिश्र, अनुकरण, रीति और माध्यम के आधारों पर काव्य का वर्गीकरण किया है । [6] पाश्चात्य विचारक हडसन ने भी काव्य को वर्गीकृत किया है, उन्होंने काव्य रुपों को दो वर्गो में विभक्त किया है । [7] पाश्चात्य चिंतको ने काव्य को विविध रुपों में वर्गीकृत किया है मगर उन्होंने खंडकाव्य जैसे काव्य रुपों को नहीं माना है ।

इ) <u>हिंदी में काव्य का वर्गीकरण</u> :–

संस्कृत और अंग्रेजी साहित्यकारों ने काव्य के विविध रुप बनाये है और उन्हें माना भी है । उनके विचारों का प्रभाव हिंदी साहित्य के आचार्योंपर भी पडा है । हिंदी के साहित्यकारों ने भी काव्य का वर्गीकरण किया है मगर उन्होंने स्वतंत्र रुप में वर्गीकरण नहीं किया है । डॉ.श्यामसुंदरदास बाबू गुलाबराय, आ.विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, आ.भगीरथ मिश्र जैसे हिंदी के आचार्यो ने काव्य रुपों का वर्गीकरण किया है । उन्होंने काव्य रुपों का वर्गीकरण कुछ अलग–सा किया है । उसमें कुछ नयापन दिखाया है । किंतु उन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी का अनुकरण जरुर किया है । उनके वर्गीकरण में स्वतंत्र रुपों का वर्गीकरण का अभाव दिखायी देता है ।

डॉ.श्यामसुंदरदास ने "साहित्यलोचन" नामक पुस्तक में काव्य के दो भेद किए है–व्यक्तिप्रधान और विषयप्रधान । [8] बाबू गुलाबरायजीने जो काव्य का वर्गीकरण किया है वह सुक्ष्म और अधिक संतुलित है । उनके द्वारा किया गया वर्गीकरण इस प्रकार है । [9]

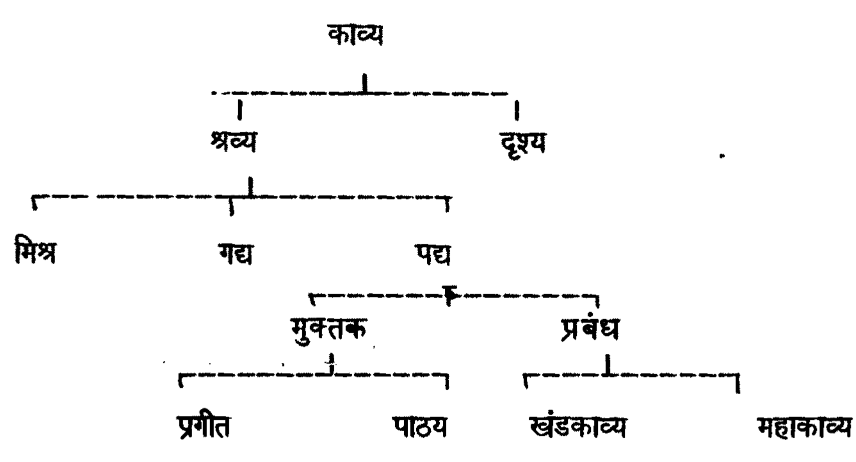

आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने भी काव्य का वर्गीकरण किया है । उनके अनुसार काव्य का वर्गीकरण –

काव्य

शैली   अर्थ   बंध

गद्य   पद्य   मिश्र   उत्तम   मध्यम   अधम   प्रबंध   मुक्तक

महाकाव्य   खंडकाव्य   एकार्थकाव्य

मिश्रजी के वर्गीकरण को देखने पर पता चलता है कि, उन्होंने शैली, अर्थ और बंध के आधार पर काव्य का वर्गीकरण किया हैं । 10

डॉ. भगीरथ मिश्रजी ने भी काव्य का वर्गीकरण किया है । उन्होंने "काव्यशास्त्र" में काव्य का वर्गीकरण इस प्रकार किया है –

पद्यकाव्य

प्रबंध काव्य   निबंध   निर्बंध

महाकाव्य   खंड प्रबंध
(खंडकाव्य)

पुराण   आख्यान   महाकाव्य

इसप्रकार संस्कृत, अंग्रेजी और हिंदी के विद्वानों ने काव्य का वर्गीकरण किया है ।

खंडकाव्य का स्वरुप :–

प्रबंध काव्य और मुक्तक काव्य को श्रव्य काव्य के दो भेद माने गये हैं । आ.रामचंद्र शुक्ल ने "जायसी ग्रंथावली" की भूमिका में प्रबंध काव्य शब्द का प्रयोग "महाकाव्य" के लिए हि किया है । उन्ही की मतानुसार महाकाव्य में मानव के संपूर्ण जीवन का विवेचन होता है । 11 "हिंदी साहित्य कोश" में भी डॉ.धीरेंद्र वर्मा ने प्रबंध काव्य को महाकाव्य कहा गया है । 12 प्रबंध काव्य में वस्तुसंगठन कथानक के द्वारा किया जाता है । कहीं प्रबंध काव्य में महापुरुष के जीवन के किसी महत्वपूर्ण घटना का वर्णन होता है तो कहीं–कहीं संपूर्ण जीवन का चित्रण होता है । महाकाव्य में संपूर्ण जीवन का चित्रण होता है तो खंडकाव्य में किसी महत्वपूर्ण घटना का चित्रण होता है । कहीं–कहीं प्रबंध काव्य महाकाव्य और खंडकाव्य के बीच का भी हो सकता है । इस दृष्टि से प्रबंध काव्य के दो भेद है – महाकाव्य और खंडकाव्य ।

सुप्रसिध्द जैन विद्‌वान आ.हेमचंद्र ने अपने ग्रंथ "काव्यानुशासन" में महाकाव्य का अत्यंत संक्षेप में लक्षण लिखते हुए यह बतलाया है कि महाकाव्य में छंद, सर्गबध्दता, संधिसंगठन, अलंकार, उक्तिवैचित्र्य, वर्णन और भावरसादि विशेषताएँ होना चाहिए । 13 प्रबंध काव्य के अंतर्गत महाकाव्य को अग्रक्रम प्राप्त है । उसके बाद खंडकाव्य का स्थान है । खंडकाव्य के "खंड" शब्द का अर्थ बिखरा हुआ, या खंडित हुआ ऐसा नहीं है । क्योंकि खंडकाव्य प्रबंध काव्य का एक भेद है । खंडकाव्य में कथामिश्रित सुसंबध्दता होती है । इसीलिए खंडकाव्य को महाकाव्य में वर्णित समग्र जीवन के एक खंड का चित्र ही मानना पडेगा । खंडकाव्य के "खंड" शब्द के विवेचन के बारे में डॉ.शकुंतला दुबे कहती हैं – खंडकाव्य "खंड" शब्द का यह अर्थ कदापि नहीं कि बिखरा हुआ अथवा किसी महाकाव्य का एक खंड है, प्रत्युत यह "खंड" शब्द उस अनुभूति के स्वरुप की ओर संकेत करता है, जिसमें जीवन अपने संपूर्ण रुप में कवि को प्रभावित न कर आंशिक या खंड रुप में ही प्रभावित करता है । 14 लेकिन यह विचार युक्ति संगत प्रतीत नहीं होते ।

12945
A

प्रबंध काव्य का दूसरा भेद खंडकाव्य है । भारतीय आचार्योंने महाकाव्य की जितनी व्यापक चर्चा की है उतनी खंडकाव्य की नहीं की । संस्कृत में पूर्ववर्ती अलंकारियों ने प्रबंधकाव्य शब्द का प्रयोग अधिक प्रायः "सर्गबंध" या "सर्गबंधकाव्य" शब्द का ही प्रयोग किया है । क्योंकि प्रबंध के भीतर वे सर्गबंध काव्य के अतिरिक्त रुपक, कथा, आख्यायिका आदि सभी प्रबंधात्मक साहित्यरुपों को ग्रहण करते थे । भामह और दंडी ने सर्गबंध काव्य का अर्थ विशेष रुप से महाकाव्य ही लिया है पर उन्होंने खंडकाव्य की चर्चा नहीं की हैं । 15 रुद्रट ने तो प्रबंध काव्य के दो भेद माने हैं महाकाव्य और लघुकाव्य । इन दोनों को विभक्त कर उनका अंतर इस प्रकार बताया है –

"तम महन्तो येषुच वितस्तेज्यमिधियते चतुर्वर्गः
सर्वे रसः क्रियन्ते काव्य स्थाननि सर्वाणि ते लघवो
विज्ञेया येण्वन्यतयो भवेच्चतुर्वगीत् असम ग्रानेकर सा ये च समग्रैकरसयुक्ता" । 16

इस तरह सर्वप्रथम रुद्रट ने प्रबंध काव्यों के दो रुपों पर (महाकाव्य और खंडकाव्य) पर मौलिक ढंग से विचार किया है । उसने इसे लघुकाव्य कहा है । 17 परंतु उन्होंने खंडकाव्य का नाम उल्लेख नहीं किया है । अकेले विश्वनाथ ने ही खंडकाव्य की व्यापक चर्चा ही हैं । उन्होंने खंडकाव्य को प्रबंधकाव्य का दूसरा भेद माना है । इन संस्कृत के आचार्यों के विचारों को देखकर पता चलता है कि उनके संस्कृत काव्य ग्रंथों में खंडकाव्य की व्यापक स्तर पर विवेचना नहीं हुई है । खंडकाव्य का "खंड प्रबंध" नामकरण डॉ.भगीरथ मिश्र ने किया है । 18

युरोपियन समीक्षकों ने भी खंडकाव्य को महाकाव्य का रुप नहीं माना है । उन्होंने खंडकाव्य के रुप को "प्रकथनात्मक काव्य" [Narrative Poetry] के अंतर्गत रखा है । युरोपियन समीक्षक जो छोटे–छोटे महाकाव्य होते हैं उन्हें वे "एपीसोड" [Episode] कहते हैं ।

भारतीय संस्कृत के आचार्यों के साथ युरोपियन समीक्षकों ने खंडकाव्य की ओर देखा नहीं, उनकी दृष्टि महाकाव्य की ओर गयी हैं । उन्होंने महाकाव्य के लक्षणों को विस्तृत रुप दिया है और उसकी विवेचना की हैं । सिर्फ विश्वनाथ की दृष्टि खंडकाव्य पर पडी है ।

कवियों को खंडकाव्य निर्माण की प्रेरणा तो व्यक्ति के जीवन से किसी ऐसी घटना के द्वारा मिलती हैं, कि उस घटना की छाप/छाया उनके ह्दय पर पडती हैं । उस प्रसंग को खंडकाव्य के माध्यम से कवि प्रस्तुत करता है । खंडकाव्य की मूल प्रेरणा के बारे में डॉ.शकुंतला दुबे कहती हैं – "खंडकाव्य की प्रेरणा के मूल में अनुभूति का स्वरुप एक संपूर्ण जीवनखंड की प्रभावात्मकता से बनता है । जीवन के मर्मस्पर्शी खंड का बोध मात्र कवि के हृदय में नही होता, प्रत्युत उसका समन्वित प्रभाव उसके हृदय पर पडता है । तब प्रेरणा के बल पर जो रुप खडा होता है – वह खंडकाव्य कहलाता है । कहीं इस जीवन खंड की विस्तार सीमा अधिक होती है तो कहीं उसकी परिधि छोटी होती है, जिससे खंडकाव्य का कथानक कहीं बहुत बडा होता है तो कहीं बहुत छोटा । किंतु कथा के इस विस्तार एवं संकोच के तारतम्य से खंडकाव्य की महत्ता नहीं आँकी जाती, क्योंकि जीवन के किसी एक अंग को स्पर्श करनेवाला खंडकाव्य अपनी छोटी–सी परिधि में भी चमक उठता है" । 19

कहानी एकांकी की तरह खंडकाव्य का क्षेत्र सीमित होता है । इसीलिए कहानी, एकांकी की तरह साधन एकत्रित करना पडता है । खंडकाव्य में एक प्रधान घटना के चारों ओर की सामग्री एकत्रकर रचना का विधान किया जाता है । "सुदामचरित", "पंचवटी" आदि खंडकाव्य का श्रेष्ठ उदाहरण है । खंडकाव्य को आचार्यों ने प्रबंधकाव्य का एक भेद माना है । 20 इसीलिए उसमें भी वही तत्व होते हैं जो महाकाव्य में होते हैं । खंडकाव्य में कथानक सीमित होता है, उसमें प्रासंगिक कथाएँ नहीं जुडती । खंडकाव्य में मार्मिक प्रसंगो का व्यवस्थित चयन किया जाता है । खंडकाव्य में पात्रों की संख्या कम होती हैं, फिर भी उसमें सजीवता होती हैं । खंडकाव्य में संवाद और देशकाल वातावरण का भी संक्षिप्त रोचक, स्वाभाविक और परिस्थितिनुकूल योजना होती हैं ।

UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

संवाद, देशकाल वातावरण भाषाशैली तथा छंदविधान से खंडकाव्य बडा ही रोचक बनता है । खंडकाव्य का उद्देश्य महान होना चाहिए । उद्देश्य के बारे में डॉ. राजकिशोर सिंह कहते हैं – "जीवन के आदर्शों और सत्प्रवृत्तियों से खंडकाव्य को भी प्रेरणापूर्ण बनाना चाहिए । चाहे महाकाव्य जैसी विराटता, महानता, गौरव–गरिमा इस में न आ पावे फिर भी उदात्त मानवीय संवेदनाओं का खंडकाव्य में भी प्रकाशन होना ही चाहिए" । 21

खंडकाव्य का वस्तुविन्यास कथा की रोचकता के अनुसार होना चाहिए । कथा में पहले रोचकता और उत्सुकताबध्दंक रचना होनी चाहिए, बाद में रोचकता होनी चाहिए । महाकाव्य में वस्तुविन्यास नाटकीय संधियों के आधार पर किया जाता है परंतु खंडकाव्य में ऐसा कोई नियम नहीं है महाकाव्य की तरह खंडकाव्य निर्माण का एक लक्ष्य होता है । उन्हीं लक्ष्य को सामने रखकर खंडकाव्य की रचना की जाती हैं और मानव मन को उद्बोधित किया जाता है । खंडकाव्य के लक्ष्य के बारें में गोविंद त्रिगुणायत कहते हैं कि "महाकाव्य के सदृश्य खंडकाव्य का एक लक्ष्य होता है । वह लक्ष्य अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष तो हो ही सकता है, किंतु इसके अतिरिक्त किसी उदात्त भाव के उद्दीप्त रुप को सामने रखकर मानव–मन को उद्बोधित करना भी होता है" । 22

अ) परिभाषा :–

आ. विश्वनाथ कविराज ने संस्कृत काव्य ग्रंथ "साहित्यदर्पण" में खंडकाव्य की परिभाषा दी है । उन्होंने दी हुई परिभाषा इस प्रकार है –

"भाषा–विभाषा नियमात्काव्यं सर्ग–समुज्झितम् ।
एकार्थ प्रवणैः पद्यैः सन्धि सामग्र य र्जितम् ।
खंडकाव्य भवेत्काव्यंस्यैकदेशानुसारि च" । 23

"विश्वनाथ कविराज" ।

अर्थात एक कथा का निरुपण पद्यबध्द सर्गमय ग्रंथ जिस में एब संधियाँ न हो और महाकाव्य के एक देश या अंश का चित्रण या अनुसरण करनेवाला काव्य "खंडकाव्य" कहलाता है ।

विश्‍वनाथ खंडकाव्य का और लक्षण बताते हैं –

"तत्तु घटनाप्राधान्यात खंडकाव्यमिति स्मृतम" । 24

अर्थात खंडकाव्य वह है जो किसी घटना विशेष को लेकर लिखा गया हो । विश्‍वनाथ ने "वाड.मय विमर्श" में खंडकाव्य की परिभाषा लिखते हुए कहा है कि – "महाकाव्य के ढंग पर जिस काव्य की रचना होती हैं, पर जिसमें पूर्ण जीवन न ग्रहण करके खंड जीवन ही ग्रहण किया जाता है उसे खंडकाव्य कहते हैं" । खंडकाव्य में खंडजीवन इस प्रकार व्यक्त किया जाता है, जिसमें वह प्रस्तुत रचना के रुप में स्वःतापूर्ण प्रतीत होता है । 25

"साहित्यदर्पण" के अनुसार "एक देशानुसारी काव्य खंडकाव्य होता है" । इस कथन के आधार पर ही आधुनिक लेखकों ने खंडकाव्य का अध्ययन किया है ओर उसके लक्षण देने का प्रयत्न किया है ।

आ) हिंदी में खंडकाव्य चिंतन :–

1) <u>बाबू गुलाबराय</u> –

"काव्य के रुप" ग्रंथ में बाबू गुलाबराय ने खंडकाव्य की परिभाषा देते हुए लिखा है कि – "खंडकाव्य में एक ही घटना को मुख्यता दी जाकर उसमें जीवन के किसी एक पहलू की झाँकी–सी मिल जाती हैं" । 26

2) <u>कमलाकांत पाठक</u> –

एकांगी कथा का वह पद्यबध्द वर्णन, जो स्वःतापूर्ण हो – खंडकाव्य है । 27 अर्थात जिस काव्य में एक देश या अंश का अर्थात एक घटना का अनुसरण किया जाय अर्थात जिस रचना में जीवन के अंग विशेष का निरुपण हो वह खंडकाव्य है ।

3) <u>डॉ.हरदेव बाहरी</u> :-

"खंडकाव्य में एक ही घटना होती हैं और उसमें मानव जीवन के एक ही पहलू पर प्रकाश डाला जाता है । उसमें महाकाव्य के अन्य गुण पूर्णतया विद्यमान रहते हैं" । 28

4) <u>डॉ.भगीरथ मिश्र</u> :-

खंडकाव्य वह प्रबंध काव्य है जिस में किसी भी पुरुष के जीवन का कोई अंश ही वर्णित होता है, पूरी जीवन गाथा नहीं । इसमें महाकाव्य के सभी अंग न रहकर एकांध अंग ही रहते हैं । 29

5) <u>राजेंद्र द्विवेदी</u> :-

"महाकाव्य के एक अंश का अनुसरण करनेवाला काव्य महाकाव्य के लिए आवश्यक वस्तुओं में से जिसमें सबका समावेश न हो और भी अपेक्षा, या छोटे जीवन क्षेत्र का प्रबंध चित्र उपस्थित करे, खंडकाव्य है" । 30

6) <u>राजनाथ शर्मा</u> :-

"जिस काव्य में कुछ कथा हो, कुछ वर्णन हो, जिसमें कथा का अधिक विस्तार न हो और न वर्णनों का ही ऐसा लघुकाव्य "खंडकाव्य कहलाने का अधिकारी है" । 31

7) <u>डॉ.सरनामसिंह शर्मा</u> :-

"काव्य के एक अंश का अनुसरण करनेवाला खंडकाव्य होता है उससे जीवन की पूर्णता अभिव्यक्त नहीं होती । उसकी रचना के लिए कोई एक घटना अथवा संवेदना मात्र पर्याप्त होती है । 32

डॉ.बलदेव उपाध्याय ने "संस्कृत आलोचना" में, धीरेंद्र वर्मा ने "हिंदी साहित्यकोश" में और सं नगेंद्रनाथ वसु ने "हिंदी विश्वकोश" में खंडकाव्य की परिभाषा दी है परंतु असफल महाकाव्य या लघुआकार के किसी एक घटना प्रसंग पर आधारित लीला काव्य या चरितकाव्य मात्र को खंडकाव्य की संज्ञा देना समीचित नहीं हैं ।

इन परिभाषाओं को देखकर स्पष्ट होता है कि खंडकाव्य में एक देश या एक घटना का वर्णन होता है । उसमें व्यक्ति के संपूर्ण जीवन में से किसी एक महत्वपूर्ण घटना के अंश को लेकर खंडकाव्य की निर्मिती की जाती हैं । कविराज विश्वनाथ कहते हैं – "खंडकाव्य भवत् काव्यस्यैक देशानुसारि च" । अर्थात महाकाव्य के एक देश या अंश का चित्रण या अनुसरण करनेवाला काव्य खंडकाव्य कहलाता है । खंडकाव्य के एकदेशीयता से डॉ.त्रिगुणायत ने अनेक बातें स्पष्ट की हैं –

1) उसमें जीवन के किसी एक पक्ष का चित्रण किया जाता है ।

2) उसमें महाकाव्य के लक्षण संकुचित रुप में स्वीकार किए जाते हैं ।

3) रुप और आकार में खंडकाव्य महाकाव्य से छोटा होता है ।

4) कुछ अन्य विशेषताएँ–प्रभावान्विति, वर्णन, प्रवाह, आदि । 33

उपर्युक्त बातों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि महाकाव्य में संपूर्ण जीवन का चित्रण होता है, उस में विस्तृत कथा–उपकथाएँ होती हैं । नायक एक या अनेक भी होते हैं, जैसे "रघुवंश" मगर खंडकाव्य में विशिष्ट व्यक्ति के जीवन के विशिष्ट महत्वपूर्ण घटना से युक्त कथानक होता है । उसमें एक ही ऐसी मार्मिक घटना होती हैं, जो रोचकता, रमणीयता से ओत–प्रोत भरी होती हैं, जैसे – कालिदास का "मेघदूत" । महाकाव्य तो आकार से बडा होता है किंतु कहीं महाकाव्य छोटे भी होते हैं । उनका कथानक छोटा होता है परंतु वे भी महाकाव्य होते हैं क्योंकि वार्तालापों और वर्णनों के द्वारा जीवन के विविध पहलु ओं का दर्शन होता है, जैसे – "शिशुपाल वध" । वैसे तो खंडकाव्य का भी आकार छोटा होता है मगर उसके अंतर्गत एक ही घटना का वर्णन होता है । कवि महाकाव्य के लक्षणों को संकुचित रुप में स्वीकार करता है और उसे खंडकाव्य के रुप में परिभाषित करता है । खंडकाव्य की निश्चित परिभाषा को निश्चित करने के लिए हमें उनके लक्षणों को देखना चाहिए ।

इ) खंडकाव्य के तत्त्व :–

खंडकाव्य में महाकाव्य के लक्षणों को संकुचित रुप में स्वीकार किया जाता है । उन्हीं तत्त्वों की बुनियाद पर खंडकाव्य का निर्माण किया जाता है । इसीलिए हमें खंडकाव्य के प्रधान

तत्त्वों को देखना जरुरी है ।

1) यह किसी विशाल कथा का एक अंश होता है ।

2) खंडकाव्य किसी घटना विशेष को लेकर लिखा जाता है ।

3) किसी महानायक के जीवन के एक ही पहलू से संबंधित होता है ।

4) खंडकाव्य में एक ही छंद प्रयुक्त होता है ।

5) इसमें एक ही रस की प्रधानता रहती है ।

6) खंडकाव्य की कथा पौराणिक या इतिहास प्रसिध्द हो और उसमें प्रकृति का वर्णन होना ही चाहिए ।

7) खंडकाव्य के प्रारंभ में ईशस्तवन तथा वस्तु निर्देश होना चाहिए ।

8) खंडकाव्य में एक देशीयता तथा आकार लघु होना चाहिए ।

9) नायक कोई महापुरुष, देवता या क्षत्रिय हो ।

10) खंडकाव्य में सर्ग नहीं होने चाहिए ।

11) भावात्मक और प्रगीतात्मकता का बाहुल्य हो ।

ई) खंडकाव्य के अंगों का विभाजन :-

उपर्युक्त विवरण में खंडकाव्य के प्रत्येक अंग की स्पष्ट धारणा प्रकट की गयी हैं । इसे हम सात विभागों में व्यवस्थित कर सकते हैं - 1) कथावस्तु और उसका संगठन 2) नायक 3) रस 4) छंद 5) वर्णन 6) नाम 7) उद्‌देश्य ।

1) <u>कथावस्तु</u> :-

खंडकाव्य में केवल एक ही कथा होती हैं और वह भी विस्तृत नहीं होती । वह किसी विशाल कथा का अंश होती हैं । कथा का प्रारंभ ईशस्तवन तथा वस्तु निर्देशन से होना चाहिए । खंडकाव्य की कथा किसी इतिहास प्रसिध्द महापुरुष सज्जन के वास्तविक जीवनगाथा में से किसी एक

महत्वपूर्ण घटना पर आधारित होनी चाहिए । खंडकाव्य के कथानक के बारे में डॉ. शकुंतला दुबे कहती हैं कि "उसमें प्रासंगिक कथाओं का अभाव. ही होता है । उसकी कथा सर्गो में होकर गूँथी जा सकती है और उसके बीना भी उसका प्रणयन हो सकता है । 34

खंडकाव्य में सर्ग नहीं होते । सर्ग के बारे में डॉ. त्रिगुणायत कहते हैं – "खंडकाव्य सर्गबध्द हो भी सकता है ओर नहीं भी हो सकता । खंडकाव्य यदि सर्गबध्द रखना हो तो फिर सर्ग छोटे होने चाहिए । वे संख्या आठ से अधिक नहीं होनी चाहिए" । 35

2) <u>नायक</u> :–

खंडकाव्य का नायक कोई देवता, उच्च कुल में उत्पन्न क्षत्रिय महापुरुष होता है । ऐसे व्यक्ति का चरित्र निश्चित ही समाज में सद्वृत्तियों का विकास करनेवाला और दुर्वृत्तियों का विनाश करनेवाला होगा । नायक के जीवन के महत्वपूर्ण अंश–विशेष पर ही कथा का संगठन होता है ।

3) <u>रस</u> :–

खंडकाव्य में एक ही रस की प्रधानता रहती हैं । अन्य रस गौण रुप में होते हैं । रस के बारे में "साहित्यलोचन" में राजकिशोर सिंह ने कहा है कि रस एवं भाव का विस्तार खंडकाव्य में कम होता है फिर भी उसमें एक मुख्य रस होता है । 36

4) <u>छंद</u> :–

कथा के विकास ओर रस प्रवाह की गति के लिए छंद प्रयोग का नियम है । भावानुकूल छंद विधान भी उसके सौंदर्य की वृध्दि करता है । 37 खंडकाव्य में एक ही छंद प्रयुक्त होता है । परंतु इसमें कुछ अपवाद भी मिलते हैं । एक संघात अथवा एकार्थ खंडकाव्य जिस में कि एक प्रकार के छंद में ही एक घटना या दृश्य का वर्णन किया जा सकता है और दूसरा अनेकार्थ खंडकाव्य जिसमें अनेक प्रकार के छंदों में विविध भावों के साथ जीवन के एक अंश का चित्रण होता है । 38

5) <u>वर्णन</u> :-

खंडकाव्य में ज्यादातर प्रकृति का वर्णन होता है, साथ में सज्जन की प्रशंसा और दुर्जनों की निंदा का भी वर्णन होता है । लेकिन खंडकाव्य में अधिक वर्णन नहीं होता । "प्रकृति के रमणीय चित्रों की अवतारणा संक्षेप में संश्लिष्ट शैली में की जा सकती हैं किंतु यदि भाव या परिस्थिति की पृष्ठभूमि के रुप में की जाय तो और भी अच्छा है ।" 39

6) <u>नाम</u> :-

खंडकाव्य का नामकरण नायक या कथावस्तु के आधार पर किया जाता है ।

7) <u>उद्देश्य</u>:-

खंडकाव्य का उद्देश्य महान होता है । धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इनमें से एक की प्राप्ति ही नायक के जीवन का लक्ष्य होता है और वहीं खंडकाव्य का उद्देश्य है । खंडकाव्य के उद्देश्य के बारेमें राजकिशोर सिंह कहते हैं कि – "जीवन के आदर्शों और सत्प्रवृत्तियों से खंडकाव्य को भी प्रेरणापूर्ण बनाना चाहिए । चाहे महाकाव्य जैसी विराटता, महानता, गौरव–गरिमा इसमें न आ पावें, फिर भी उदारता मानवीय संवेदनाओं का खंडकाव्य में भी प्रकाशन होना चाहिए ।" 40

उ) खंडकाव्य की विशेषताएँ :

उपर्युक्त विवेचन से निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ निकलती हैं –

1. खंडकाव्य विषयप्रधान होते हैं ।
2. खंडकाव्य का फलक विस्तृत नहीं होता । 41
3. संस्कृत अलंकारवादियों के मतानुसार खंडकाव्य प्राय: सर्गों में विभक्त नहीं होते । अर्थात खंडकाव्य के लिए सर्गबध्दता अनिवार्य नहीं हैं ।
4. कथाविन्यास में नाटकीयता, खंडकाव्य के आकर्षण को बढाती हैं ।
5. खंडकाव्य में वर्णन विस्तार नहीं हो सकता । उसकी विषयवस्तु भावात्मक अधिक होती हैं ।

6. खंडकाव्य के कथानक का विकास बहुत कुछ भावविकास पर आधारित है । इसी कारण खंडकाव्य का कथानक पौराणिक, ऐतिहासिक, कल्पित, प्रतीकात्मक, चरितकाव्य आदि प्रकारों का हो सकता है ।

7) प्रभावान्विति और निर्बाध वर्णन प्रवाह यह भी एक खंडकाव्य की विशेषता है । 42

ऊ) खंडकाव्य के भेद :

विद्वानोंने खंडकाव्यों के कई प्रकार निश्चित किए है । साहित्यकारोंने अपनी बुध्दि कौशल्य द्वारा और लोकरुचि के अनुसार खंडकाव्य का रुप परिवर्तन होता है । इसी कारण खंडकाव्य का एक रुप नहीं रहा है । इनके कई प्रकार निर्माण हुए है । डॉ. शकुंतला दुबे के अनुसार खंडकाव्य के भेद की तालिका इस प्रकार है – 43

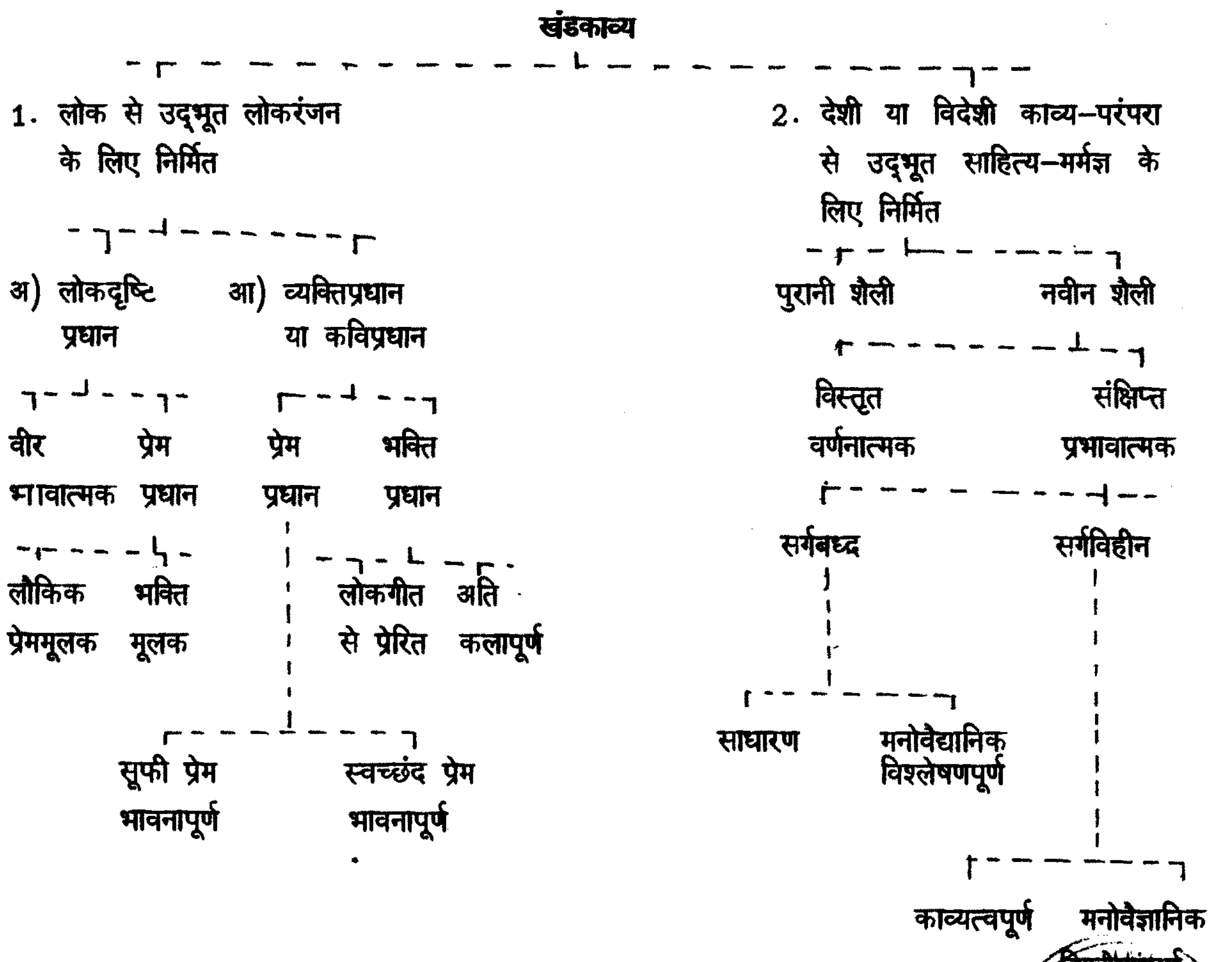

LIBRARY KOLHAPUR

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि डॉ. शकुंतला दुबे ने खंडकाव्य के प्रमुख दो भेद किए है । इन दो प्रमुख भेदों के कुछ उपभेद भी बताएँ है । उन उपभेदों में से कुछ महत्वपूर्ण उपभेदों का हम विवेचन करेंगे ।

1) **लोक से उद्भूत :**

इसप्रकार के खंडकाव्य के दो भेद है – (1) लोकदृष्टि प्रधान खंडकाव्य, (2) कवि प्रधान या व्यक्तित्व प्रधान खंडकाव्य ।

क) लोकदृष्टि प्रधान खंडकाव्य :–

इस खंडकाव्य के अंतर्गत लोक मनोरंजन की सामग्री होती है । लोक प्रचलित कथाओं से प्रेरणा लेकर लोगों को खुष करने के लिए मनोरंजन करना ही कवि का प्रधान लक्ष्य होता है । इस खंडकाव्य में कवि का व्यक्तित्व गौण होता है ।

ख) व्यक्तित्व प्रधान खंडकाव्य :–

कवि प्रधान या व्यक्तित्व प्रधान खंडकाव्य में कवि का व्यक्तित्व मुख्य होता है और उसका व्यक्तित्व मुखरित हो उठता है । उसकी भाषा, शैली और भावाभिव्यक्ति में उद्भूत सौष्ठव और रस परिपाक की उद्भूत क्षमता भी आ जाती है । व्यक्तित्व प्रधान खंडकाव्य में प्रेम, करुणा, हर्ष, ईर्ष्या, क्रोध, द्वेष आदि भावों की सहज व्यंजना ही प्रधान होने के कारण कवि उन्मुख होकर ऐसा मनोरम काव्य बनाता है, जो सामान्य जन को हर्षित करता है । व्यक्तित्व प्रधान खंडकाव्य के दो भेद – "प्रेमप्रधान" और "भक्ति प्रधान" ।

1) प्रेम प्रधान खंडकाव्य :–

लोक प्रचलित कथाओं को आधार बनाकर इस प्रकार के खंडकाव्य की रचना की जाती है । प्रेम प्रधान खंडकाव्य के दो भेद – (अ) सूफी प्रेम प्रधान खंडकाव्य, (ब) स्वच्छंद प्रेम प्रधान खंडकाव्य । 44

अ) <u>सूफी प्रेम–प्रधान</u> :–

सूफी प्रेम भावना से प्रभावित होकर कवियोंने ऐसे खंडकाव्यों को बनाया है, जिसमें व्यक्ति के द्वेष भाव. को दूर करने का प्रयत्न किया है । सूफी कवियोंने लोक प्रसिध्द भारतीय कथाओं के आधार पर काव्य का निर्माण किया है। उसमें प्रकृति वर्णन एवं रुप वर्णन ओतप्रोत भरा हुआ है । उसमान की "चित्रावली", नूरमुहम्मद की "इंद्रावली", सूरदास का "नलदमन काव्य" आदि खंडकाव्य इसके उत्कृष्ट उदाहरण है । इन खंडकाव्यों पर अपभ्रंश के चरितकाव्यों का और फारसी की मसनवी पध्दति का प्रभाव है ।

ब) <u>स्वच्छंद प्रेम–प्रधान</u> :–

स्वच्छंद प्रेमप्रधान खंडकाव्य की भावाभिव्यक्ति लोकगीतों की पध्दति पर हुई है । वैसे तो यह खंडकाव्य सूफी प्रभाव से पूर्णतः मुक्त है । "ढोला मारु रा दोहा" इस खंडकाव्य पध्दति का लाजवाब उदाहरण है । सूफी प्रेम–प्रभाव और स्वच्छंद प्रेम–प्रधान खंडकाव्य के अंतर के बारे में डॉ.शकुंतला दुबे कहती है कि, "प्रबंध के अंतर्गत नियोजित वर्णनों से हल्के से संकेत में सूफी खंडकाव्य फारसी की मसनवियों के निकट जा पहुँचते हैं, वहाँ स्वच्छंद प्रेम–प्रधान खंडकाव्य सीधी–सादी शैली में उन्मुक्त लोकगीतों से हिल–मिल जाते हैं । 45

2) <u>भक्तिप्रधान खंडकाव्य</u> :–

भक्तिप्रधान खंडकाव्य कवि या व्यक्तित्व प्रधान खंडकाव्य का दूसरा भेद है । इस में वर्णनात्मक तत्त्व की प्रधानता है । "सुदामा चरित" एक ऐसा अपवादात्मक खंडकाव्य है, जो संवाद शैली में लिखा है–जो काफि प्रसिध्द है । भक्तिप्रधान खंडकाव्य में ज्यादातर कथावस्तु पौराणिक होती तुलसीदास का "पार्वती मंगल", "जान–की मंगल", नंददास का "भँवरगीत", नरोत्तमदास का "सुदामाचरित" आदि इसके उत्कृष्ट उदाहरण है, जो भक्ति प्रधान खंडकाव्य के अंतर्गत आते हैं । वैसे तो इनमें विषय और चरित्र अलौकिक होते हैं, परंतु काव्य–रुप की दृष्टि से इन में कोई मौलिकता नहीं मिलती ।

2) **<u>देशी–विदेशी काव्य परंपरा से उद्भूत</u>** :–

खंडकाव्य :–

डॉ.शकुंतला दुबे के अनुसार खंडकाव्य के प्रमुख दो भेद है । उसी में पहले प्रकार की निर्मिती लोकरंजन के लिए होती हैं, उन खंडकाव्यों का लक्ष्य मनोरंजन ही है । लोक से उद्भूत खंडकाव्य का रचनाकाल आदिकाल और मध्यकाल है । उन्हीं कालखंड में भारत में घटित हुई घटनाएँ, कथाएँ उसमें सम्मिलित है । मगर मध्यकाल के उत्तरार्ध में जो घटनॉए घटित हुई है, वो घटनाएँ सलग्न है– देशी–विदेशी काव्य परंपरा के अंतर्गत । दूसरे खंडकाव्य के प्रकार के अंतर्गत देश विदेश के घटनाओं का नया काव्य या पुराने का अनुकरण है लेकिन उसमें नयापन है । किंतु कुछ खंडकाव्यों में पहले खंडकाव्यों का अनुकरण है, उनका स्पर्श है – जो मध्यकाल के अंत में लिखे हैं । मध्यकाल के उत्तरार्ध में और आधुनिक काल के पूर्वाध में जो खंडकाव्य लिखे हैं – उनका वर्गीकरण शैलीदृष्टि से दो भागों में कर सकते हैं – 1) प्राचीन शैली के खंडकाव्य, तथा 2) नवीन शैली के खंडकाव्य । 46 उन काल के खंडकाव्यों में वीर और स्वतंत्र शैली को अपनाया है किंतु ज्यादातर वीरशैली में भी लिखे है और उनका गहरा प्रभाव पडा है ।

क) <u>वीर काव्य शैली</u> :–

उस काल में राजाओं को खुष करने के लिए कवि लोग उनके आश्रय में रहते थे । उन्होंने अपने आश्रयदाताओं का गुण–गान का वर्णन अपने काव्य में किया है । कभी वे उनके वीरत्व का वर्णन करते हैं, तो कभी श्रृंगार भावना का । उनके काव्य में वीर रस के साथ–साथ श्रृंगार रस भी मिलते हैं । विवेच्च स्थिति को देखकर स्पष्ट होता है कि उन्होंने वर्णनात्मक शैली को ही अपनाया है । जोधराज का "हम्मीर रासो", केशवदास का "वीरसिंह देव चरित" आदि खंडकाव्यों के विषय वस्तु में वीर रसात्मक प्रसंगों को लिया है । निष्कर्षत: ये खंडकाव्य वीर काव्य शैली में लिखे है ।

ख) <u>नवीन शैली</u> :–

आधुनिक युग में कुछ ऐसे काव्य लिखे है जिनका स्वर राष्ट्रीय भावना का है । उन्होंने जो

खंडकाव्य लिखे है उन काव्यों का भी विषय युध्द और प्रेम का है । उन्होंने वर्णनात्मक शैली को अपनाकर वीरकाव्यों को स्पर्श किया है, लेकिन ज्यादा वर्णन नहीं किया है । उनके काव्यों को देखकर स्पष्ट होता है कि काव्य में नाटकीयता का अधिक समावेश है । नवीन शैली में लिखनेवाले कवि काव्य–रुपों के प्रति अधिक सचेष्ट दिखाई देते हैं और उन्होंने खंडकाव्य की कथा–प्रवाह में अनुपात का ध्यान अधिक रखा है । नवीन शैली में जो खंडकाव्य लिखे हैं – वो खंडकाव्य कुछ मात्रा में पुराने से अलग है – जैसे कि मैथिलीशरण गुप्त का "रंग में भंग" ।

ग) वर्णनात्मक शैली :–

श्यामनारायण पांण्डेय का "हल्दी घाटी", जौहर, खंडकाव्य वर्णनात्मक शैली में लिखे है । गुरुभक्त सिंह का "नूरजहाँ" खंडकाव्य को डॉ. शकुंतला दुबे इसी श्रेणी का खंडकाव्य मानती हैं । 47 इस प्रकार के खंडकाव्यों में कुछ खंडकाव्य ऐसे है– जिसमें ज्यादा वर्णन है उन खंडकाव्यों का विस्तृत वर्णन शैली के खंडकाव्य कहते हैं तो जिस में कम वर्णन है उन्हें संक्षिप्त वर्णन शैली के खंडकाव्य कहते हैं । "हल्दी घाटी" तथा "जौहर" खंडकाव्य की कथा को सर्गो में विभाजित किया है । उसके चरित्र–चित्रण का संगठन भी अच्छी तरह किया है और उनकी शैली भी वीर रसात्मक खंडकाव्यों जैसी है । ये खंडकाव्य काव्यकला की दृष्टि से अपना विशिष्ट स्थान बना बैठे हैं ।

घ) प्रभावात्मक शैली :–

कुछ ऐसे खंडकाव्य है जो प्रभावात्मक शैली में लिखे जो सर्गबध्द है । उनमें कुछ खंडकाव्यों की कथावस्तु पौराणिक और कुछ खंडकाव्यों की कल्पना से जडित है । जैसे कि – राम नरेश त्रिपाठी का "पथिक", "मिलन" और "जयद्रथ वध", "नहुष" इन खंडकाव्यों की कथा पौराणिक है । इनकी विशेषता यह है कि इन में हृदय के अंतर्द्वंद्वों का सुंदर चित्रण हुआ है । कुछ ऐसे भी खंडकाव्य है, जो सर्गबध्द नहीं है । प्रभावात्मक शैली में लिखे खंडकाव्य इतिवृत्तात्मक, प्रकृति वर्णनात्मक, शुध्द मनोविज्ञान पर आधारित है ।

खंडकाव्य के भेदों का अध्ययन की कथा, पौराणिक और कल्पनात्मक है । इनके अलावा नवीन ढंग से भी कुछ खंडकाव्य रचे है – जैसे कि कवि नवीन का "विस्मृत उर्मिला", डॉ.रामकुमार वर्मा का "चित्तोड की चिता", और पंत का "ग्रंथि" आदि ।

भारतीय काव्य परंपरा, देशी और विदेशी काव्य पध्दति में अनेक तरह के खंडकाव्य बने हैं । वे खंडकाव्य अपनी–अपनी जगह अपना अस्तित्व कायम किए हुए है । और उन सब खंडकाव्य पध्दति का अनुकरण या उन शैली जैसे अनेक खंडकाव्य भी बन रहे हैं ।

खंडकाव्य का सैध्दांतिक विवेचन :-

क) **खंडकाव्य और महाकाव्य की समता–विषमता :-**

खंडकाव्य और महाकाव्य दोन्हों प्रबंध काव्यों के भेद है । खंडकाव्य और महाकाव्य का भेद कहानी और उपन्यास के भेद की तरह है । उपन्यास में संपूर्ण जीवन चित्रण होता है तो कहानी में किसी एक घटना का चित्रण । इसीलिए आकार की दृष्टि से उपन्यास का आकार बडा और कहानी का आकार छोटा । उसी तरह खंडकाव्य छोटा अथवा खंडरुप होता है इसीलिए उसे खंडकाव्य कहते हैं । महाकाव्य का आकार बडा होता है इसीलिए उसे महाकाव्य कहा जाता है । उनका यह नामकरण आकार जनित है । महाकाव्य में महत् उद्देश्य, महत् चरित्र और समग्र युग जीवन का चित्रण होता है तथा उसमें गरिमामय और उद्दात्त शैली अपेक्षित है । खंडकाव्य में जीवन का खंड दृश्य चित्रित होता है । अतः कथा की लघुता और उद्देश्य की सीमाओं के कारण बृहदाकार तथा महान नहीं बन पाता । खंडकाव्य में नायक के जीवन की किसी एक ही घटना का वर्णन होता है । इसीलिए उसमें जीवन के किसी एक ही पक्ष की झाँकी मिलती हैं । उसी पक्ष का रोचक और मार्मिक उद्घाटन किया जाता है । 48

खंडकाव्य का लक्ष्य व्यक्ति है, तो महाकाव्य संपूर्ण जाति को समेटकर चलता है । आकार की विशालता, बहुमुखी चित्रण, अनेक कथाओं के कारण महाकाव्य की कथा सर्गो में विभाजित होती हैं

परंतु खंडकाव्य में सर्गबध्दता अनिवार्य नहीं है । महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग में एक छंद होता है और सर्ग के अंत में छंद परिवर्तन होता है । खंडकाव्य में एक ही छंद का प्रयोग होता है । अपवादात्मक कई खंडकाव्यों में छंद .परिवर्तन है लेकिन निष्कर्षता हम कह सकते हैं कि खंडकाव्य में एक ही छंद होता है । महाकाव्य में तो युग जीवन के, वैयक्तिक जीवन के विविध पहलुओं का चित्रण होता है । उसकी रचना सर्गबध्द होती हैं । प्रत्येक सर्ग में जीवन का पक्ष वर्णित होता है । सभी सर्ग तारतम्यिक रुप से एक विशिष्ट गरिमायुक्त भावना से निबध्दित रहते हैं ।

"खंडकाव्य की कथा छोटी होती है और उसमें कथा संगठन लाया जा सकता है" । 49 खंडकाव्य में कोई लघुकथा–घटना पद्यबध्द की जाती हैं किंतु द्रष्टव्य है कि महाकाव्य के किसी अंश को खंडकाव्य नहीं कहा जा सकता । खंडकाव्य–महाकाव्य के बडे कथानक से कथा भाग लेकर स्वतंत्ररुप से लिखा जा सकता है । खंडकाव्य अपनी परिधि में वह स्वतःपूर्ण है ।

विश्वनाथ के अनुसार महाकाव्य का नायक क्षत्रिय होना चाहिए । 50 और वह किसी जाति या राष्ट्र की सामुहिक चेतना का संवाहक होता है । संतुलित कथानक, सुस्पष्ट चरित्र विन्यास, प्रशस्त और जीवंत जीवन संदेश के अतिरिक्त शैली भी औदात्यपूर्ण होती हैं । भाषा और छंद का सुष्ठु प्रयोग, वर्णन का चारुत्य क्रमशः उसे आकर्षक एवं ओजस्वी बनाने में सहायक होता है । डॉ.गोविंद त्रिगुणायत के अनुसार खंडकाव्य का नायक साधारणतया उच्च वंश का होता है । 51 और उसके पूर्ण जीवन को न ग्रहण कर उसका खंड जीवन ग्रहण किया जाता है । अर्थात खंडकाव्य में जीवनवृत्त तो ग्रहण किया जाता है, परंतु उसमें महाकाव्य की तरह अधिक विस्तार नहीं होता बल्कि उस में कथा का कोई उद्दिष्ट पक्ष प्रबल होता है । 52 इसीलिए महाकाव्य के बारे में विवेचित उपर्युक्त बातें खंडकाव्य में योजना उचित नहीं है ।

महाकाव्य की कथा विस्तारित होती है और उस बृहदाकर कथा के संयोजन और संगठन के लिए महाकाव्य में पंचसंधियों का विधान होता है । 53 उसके एक सर्ग में एक ही छंद होता है । 54

और सर्ग के अंत में छंद परिवर्तन होता है तथा सर्ग के अंत में आगामी कथा की सूचना देना अनिवार्य रहता है । 55 खंडकाव्य में सभी सन्धियाँ अपेक्षित नहीं है क्योंकि खंडकाव्य की कथा एक ही छंद में लिखी जाती हैं और उसे विविध छंदों में भी लिखने के लिए कवि स्वतंत्र रहता है ।

महाकाव्य में प्रकृति का वर्णन विस्तार से किया जाता है । प्रकृति वर्णन से महाकाव्य का सौंदर्य बड जाता है और कथावस्तु रोचक और रमणीय बनती है । खंडकाव्य में प्रकृति का वर्णन होता है लेकिन अल्पाकार में ।

महाकाव्य में श्रृंगार, वीर, शांत इन तीनों में से एक रस अंगीरुप और अन्य रस अंग रुप होते हैं । किंतु खंडकाव्य में तो एक ही रस की प्रधानता रहती है, अन्य रस गौण रुप में रहते हैं ।

महाकाव्य की शुरुवात मंगलाचरण से होती है और उसके बाद सज्ज्न--दुर्जन के गुणों का विवेचन होता है । खंडकाव्य में शुरुवात मंगलाचरण से होती है किंतु संक्षिप्त रुप में । महाकाव्य और खंडकाव्य का नामकरण कथा या नायक के नाम के आधार पर किया जाता है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि महाकाव्य और खंडकाव्य में कुछ साम्य तो कुछ विषमता दिखायी देती हैं ।

ख) **खंडकाव्य और चरितकाव्य :-**

चरितकाव्य वर्णनात्मक प्रबंध है । वह जीवन के अत्यंत निकट है । अत: उसका यथार्थ होना आवश्यक है । लेकिन खंडकाव्य की कथा यथार्थ होना आवश्यक नहीं है । खंडकाव्य में नायक के जीवन की एक ही घटना मात्र का वर्णन होता है, परंतु चरित काव्य में नायक के संपूर्ण जीवन का वर्णन अभिप्सित है । डॉ.भगीरथ मिश्र कहते हैं कि, "चरित काव्य में रोचक काव्यमय शैली में किसी व्यक्ति का विशेष रुपसे वीर या महापुरुष का घटनाक्रम के अनुसार जीवन चरित लिखा जाता है । 56 कभी--कभी नायक के जीवनवृत्त के साथ उसकी वंशावली अथवा एक वंशावली विशेषता का भी वर्णन

होता है, परंतु खंडकाव्य–चरितकाव्य की अपेक्षा कलात्मक अधिक होती है । खंडकाव्य में अलंकरण, चमत्कार और पांडित्य प्रदर्शन दिखायी देता है, परंतु चरितकाव्य में इनका अंशतः अभाव भी दिखायी देता है । चरितकाव्य की वस्तु योजना इतिवृत्तात्मक स्फटित और विशृंखल होती हैं । 57 वीर सिंहदेव–चरित, रतनबावनी, सुजान चरित जैसे हिंदी के चरित काव्योंसे स्पष्ट होता है कि चरितकाव्य का एक रुप आत्मचरितात्मक भी हो सकता है ।

इसके विपरित खंडकाव्य की कथा योजना कहीं अधिक वर्णनात्मक संगठित एवं शृंखलाबध्द होती हैं । सुकवि एक छोटी घटना को भी अपनी वर्णनात्मक शैली के सहारे बृहत रुप प्रदान कर खंडकाव्य रच सकता है, उदा. श्यामनारायण पाण्डेय का "हल्दी घाटी" ।

चरित काव्य का आरंभ वक्ता–श्रोता के रुप में होता है । 58 खंडकाव्य में एकही कथा होती हैं, उसमें प्रारंभिक कथाएँ नहीं जुडती, उनके लिए खंडकाव्य में कोई स्थान नहीं । चरितकाव्य में अवांतर कथाओं की समायोजना हाती हैं । चरितकाव्य का अंत प्रचारात्मक हो सकता है, परंतु खंडकाव्य उत्कृष्ट कलाकृति के रुप में जीता है ।

ग) **खंडकाव्य और एकार्थकाव्य :–**

आ. विश्वनाथ प्रसाद ने वाड.मय विमर्श में प्रबंधकाव्य के तीन भेद किए है – "महाकाव्य, 2) एकार्थकाव्य और 3) खंडकाव्य । उनके अनुसार महाकाव्य और खंडकाव्य के बीच की कडी एकार्थकाव्य है जो अंतर महाकाव्यात्मक उपन्यास, सामान्य उपन्यास और कहानी में है । लगभग वैसा ही अंतर महाकाव्य, एकार्थकाव्य और खंडकाव्य में है । जिनमें किसी व्यक्ति के संपूर्ण जीवन का चित्रण होता है, पर समग्र युग जीवन का चित्रण नहीं होता और महाकाव्य के अन्य सभी गुण पाये जाते हैं, उन्हें प्रायः एकार्थ काव्य कहा जाता है । एकार्थकाव्य में महाकाव्य की–सी विशदता एवं व्यापकता का अभाव रहता है । 59

खंडकाव्य और एकार्थकाव्य में सबसे पहला साम्य यह है कि जिसतरह खंडकाव्य की रचना भाषा या विभाषा में की जाती हैं, उसी तरह एकार्थ काव्य की रचना भी भाषा या विभाषा में की जाती हैं। एकार्थ काव्य की रचना सर्गबध्द होती हैं, परंतु खंडकाव्य की रचना सर्गबध्द होना आवश्यक नहीं है। खंडकाव्य और एकार्थकाव्य दोनों में सभी पंचसंधियाँ नहीं होती।

खंडकाव्य का उद्‌देश्य चतुवर्ग की फलप्राप्ति में से किसी एक वर्ग की फल प्राप्ति होता है। किंतु एकार्थ काव्य का उद्‌देश्य कोई एक अथवा प्रयोजन की सिध्दि होती हैं। खंडकाव्य में नायक का खंड जीवन ही अंकित होता है किंतु एकार्थ काव्य में नायक का विस्तृत जीवन भी अपने व्यापक रुप में चित्रित हो सकता है। उसमें भी नायक का एक लक्ष्य साधना में लगा हुआ उसका जीवनांश होता है।

घ) **खंडकाव्य और प्रेमाख्यान काव्य** :-

आख्यान वह विस्तृत प्रबंध है, इसके अंतर्गत बहुत-सी घटनाएँ या खंड हो सकता हैं। इन विभिन्न प्रसंगो में प्रेम, नीति, भक्ति, वीरता, आदि विषयों का निरुपण होता है। आख्यान में जो कथाएँ संकलित होती हैं, उनमें एक मुख्य कथा और अन्य कथा गौण रुप में होती हैं। इन कथाओं में ऐतिहासिक स्थानों और नामों का समावेश किया जाता है। डॉ. भगीरथ मिश्र के अनुसार आख्यान काव्य के भेद-प्रेमख्यान, नित्याख्यान, साहसिक आख्यान आदि है। 60 बाबू शर्मा ने सूफी प्रेमाख्यान काव्य को कथाकाव्य का अवांतर भेद स्वीकारी है। 61

उद्‌देश्य की दृष्टि से प्रेमाख्यान काव्य के सूफी एवं सूफीतर दो भेद है। सूफी प्रेमाख्यान काव्य प्रतीकात्मक है। वहाँ लौकिक - अलौकिक विविध कथा समांतर चलती हैं। सूफी कवियों ने लोक प्रसिध्द भारतीय कथाओं के आधार पर उसकी निर्मिती की है। असूफी प्रेमाख्यानो में यह विविधता नहीं है। उसमें लौकिक प्रेमकथा ही उद्‌दिष्ट होती हैं। प्रेमाख्यान काव्य को डॉ. रामकुमार वर्मा ने "अलिफ लैला" का रुपांतर कहा है। 62

कथाकाव्य का एक रुप प्रेमाख्यान काव्य है, इसके सर्वसामान्य लक्षण निम्नलिखित है –

1) प्रेमाख्यान काव्य का उद्‌देश्य मनोरंजन होता है। इनके नायक धीरोदात्त न होकर भी ललित या धिर–प्रशांत हैं।

2) इनमें कथाविन्यास स्फटीत, विशृंखला, जटित तथा अवांतर कथाओं से भरा होता है।

3) इनके वर्णन अतिशयोक्तिपूर्ण तथा अतिमानुष तत्त्वों से आपूर्ण होते हैं।

4) इनमें लोककथा तत्त्वों की अधिकता एवं कथानक रुढियों की भरमार होती है।

5) इनके नायकों का वीररुप, प्रेमीरुप से दबा हुआ होता है।

5) इनमें विचारों और भावों की गंभीरता उद्‌देश्य की महत्ता, बौध्दिकता ऊँचाई और भावभूमि की व्यापकता अधिक नहीं होती हैं।

कथाकाव्य के उपर्युक्त लक्षण हमे प्रेमास्थानका में देखने के लिए मिलते हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि प्रेमाख्यान काव्य और खंडकाव्य में अंतर है। प्रेमास्थान काव्य में कथाओं की भरमार होती हैं लेकिन खंडकाव्य में एक ही कथा होती हैं। खंडकाव्य में वर्णन संक्षिप्त रुप में होता है किंतु प्रेमाख्यान काव्य में अतिशयोक्तिपूर्ण तथा अतिमानुष तत्त्वों से आपूर्ण वर्णन होता है। खंडकाव्य में कोई न कोई उपदेश अवश्य रहता है। इसीलिए खंडकाव्य के नायक केवल धीरललित या धीरप्रशांत नहीं बल्कि किसी भी प्रकार के हो सकते हैं। डॉ. धीरेंद्र वर्मा ने हिंदी साहित्यकोश में लिखा है कि मध्यकाल के सारे प्रेमाख्यान –खंडकाव्य है। 63 यह विशुध्द भ्रम है क्योंकि सर्वविदित है कि जायसी का "पद्‌मावत" महाकाव्य है।

उपर्युक्त खंडकाव्य के स्वरुप और सैधांतिक विवेचन से स्पष्ट होता है कि हिंदी साहित्य में खंडकाव्य का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। हिंदी के प्रमुख कवियों ने इनके अस्तित्व को कायम रखने का कार्य किया है।

********** XXX **********

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

** संदर्भ सूची **

1. काव्यादर्श – दंडी, 1/11
2. काव्यादर्श – दंडी, 1/10
3. काव्यालंकार – रुद्रट
4. रसगंगाधर – जगन्नाथ
5. व्हरायटीज ऑफ पोएटिका – उनसायक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका 1950, व्हाल्यूम, पृ.106
6. अरस्तु का काव्यशास्त्र – अनु.डॉ.नगेंद्र और श्री.महेंद्र चतुर्वेदी भूमिका, पृ.62
7. इन इन्ट्रोडक्सन टु दी स्टडी ऑफ लिटरेचर – डब्ल्यू.एच हडसन तृ.सं.
8. साहित्यलोचन – डॉ.श्यामसुंदरदास, पृ.113
9. काव्य के रुप – बाबू गुलाबाराये, पृ.24
10. वाड.मय विमर्श – आ.विश्वनाथप्रसाद मिश्र, पृ.14
11. जायसी ग्रंथावली – आ.रामचंद्र शुक्ल, पृ.66, 67
12. हिंदी साहित्यकोश – डॉ.धीरेंद्र वर्मा, पृ.478, 479
13. काव्यानुशासन – आ.हेमचंद, अध्याय 8
14. काव्य–रुपों के मूल स्त्रोत और उनका विकास – डॉ.शकुंतला दुबे, पृ.144
15. काव्यालंकार – 1:19/20 और काव्यादर्श – 1:13/14
16. काव्यालंकार – 8:5/6
17. काव्यालंकार – रुद्रट, 16/6
18. काव्यशास्त्र – डॉ.भगीरथ मिश्र, पृ.67
19. काव्य–रुपों के मूल स्त्रोत और उनका विकास – डॉ.शकुंतला दुबे, पृ.147
20. काव्यदर्पण – रामदहिन मिश्र, पृ.249
21. साहित्यलोचन – डॉ.राजकिशोर सिंह, पृ.340
22. शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दांत – डॉ.गोविंद त्रिगुणायत, पृ.66
23. साहित्यदर्पण – विश्वनाथ कविराज, पृ.328, 29
24. साहित्यदर्पण – विश्वनाथ कविराज
25. वाड.मय विमर्श – द्वितीय संस्करण, पृ.39
26. काव्य के रुप – बाबू गुलाबराय, पृ.23
27. मैथिलीशरण गुप्ता : व्यक्ति और काव्य – डॉ.कमलाकांत पाठक, पृ.291

28. हिंदी की काव्यशैलियों का विकास – डॉ.हरदेव बाहरी, पृ.5

29. हिंदी काव्यशास्त्र का इतिहास – डॉ.भगीरथ मिश्र, पृ.421

30. साहित्यशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश – राजेंद्र द्विवेदी, पृ.80

31. साहित्यिक निबंध – राजनाथ शर्मा, पृ.767

32. हिंदी साहित्यपर संस्कृत साहित्य का प्रभाव – डॉ.सरनामसिंह शर्मा, पृ.28

33. शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दांत – डॉ.गोविंद त्रिगुणायत, पृ.64

34. काव्य–रुपों के मूल स्त्रोत और उनका विकास – डॉ.शकुंतला दुबे, पृ.143, 147

35. शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दांत – डॉ.गोविंद त्रिगुणायत, पृ.65

36. साहित्यलोचन – राजकिशोर सिंह, पृ.340

37. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र सिध्दांत – राजकिशोर सिंह, पृ.318

38. काव्यशास्त्र – डॉ.भगीरथ मिश्र, पृ.58

39. शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दांत – डॉ.गोव्रिद त्रिगुणायत, पृ.66

40. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र सिध्दांत – राजकिशोर सिंह, पृ.318

41. हिंदी साहित्य का बृहद इतिहास (प्रथम भाग) – सं.राजबली पाण्डेय, पृ.219

42. शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दांत – डॉ.गोविंद त्रिगुणायत, पृ.66

43. काव्य–रुपों के मूल स्त्रोत और उनका विकास – डॉ.शकुंतला दुबे, पृ.148

44. साहित्यिक निबंध – राजनाथ शर्मा, पृ.769

45. काव्य रुपों के मूल स्त्रोत और उनका विकास – डॉ.शकुंतला दुबे, पृ.135

46. काव्य रुपों के मूल स्त्रोत और उनका विकास – डॉ.शकुंतला दुबे, पृ.129

47. काव्य रुपों के मूल स्त्रोत और उनका विकास – डॉ.शकुंतला दुबे, पृ.138

48. शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दांत – डॉ.गोविंद त्रिगुणायत, पृ.64

49. काव्यशास्त्र – डॉ.भगीरथ मिश्र, पृ.61

50. वाड.मय विमर्श – प.विश्वनाथप्रसाद मिश्र, पृ.31

51. शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दांत – डॉ.गोविंद त्रिगुणायत, पृ.65

52. वाड.मय विमर्श – पं.विश्वनाथ्रपसाद मिश्र, पृ.31

53. काव्यशास्त्र – भामह, पृ.1/21

54. साहित्यदर्पण – विश्वनाथ, पृ.6/321

55. साहित्यदर्पण – विश्वनाथ, पृ.6/320

56. काव्यशास्त्र – डॉ.भगीरथ मिश्र, पृ.43

57. हिंदी साहित्यकोश – स.डॉ.धीरेंद्र वर्मा, पृ.287

58. हिंदी साहित्यकोश – सं.डॉ.धीरेंद्र वर्मा, पृ.287

59. वाङ.मय विमर्श – प.विश्वनाथप्रसाद मिश्र,

60. काव्यशास्त्र – डॉ.भगीरथ मिश्र, पृ.43

61. पंधरहवीं शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी तक हिंदी साहित्य के काव्य–रुपों का अध्ययन – रामबाबू शर्मा, पृ.214

62. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ.रामकुमार शर्मा, पृ.475

63. हिंदी साहित्येकोश – डॉ.धीरंद्र वर्मा, पृ.247